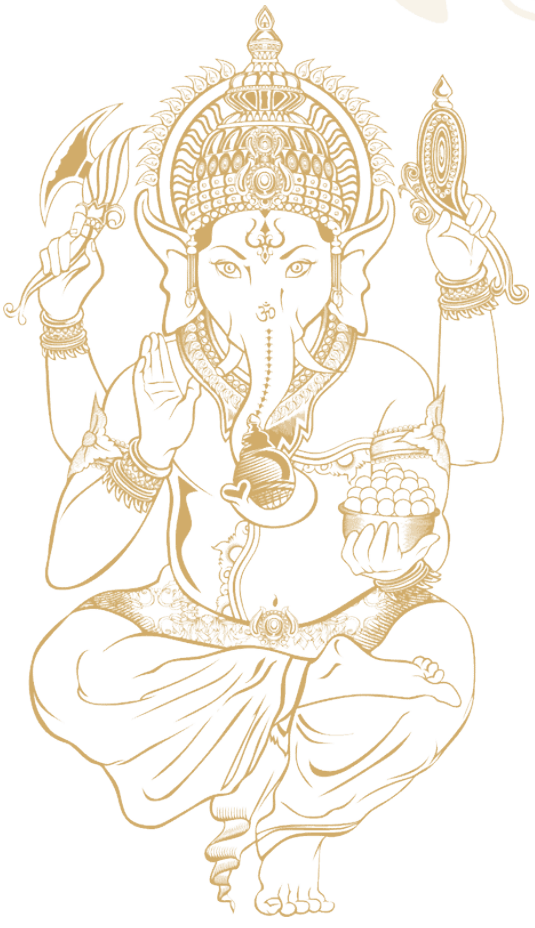

Digvijay Pooja

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121520401

Model: Horoscope-Matching

Order No: 121520401 Date: 08/03/2026

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
6-07/08/1996	जन्म तिथि	09/12/1996
मंगल-बुधवार	दिन	सोमवार
घंटे 02:05:00	जन्म समय	19:05:00 घंटे
घटी 49:37:25	जन्म समय(घटी)	30:29:01 घटी
India	देश	India
Satara	स्थान	Karad
17:43:00 उत्तर	अक्षांश	17:17:00 उत्तर
74:05:00 पूर्व	रेखांश	74:12:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:33:40	स्थानिक संस्कार	-00:33:12 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:14:02	सूर्योदय	06:52:07
19:04:07	सूर्यास्त	17:59:16
23:48:39	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:52

वृष	लग्न	मिथुन
शुक्र	लग्न लग्नाधिपति	बुध
मेष	राशि	वृश्चिक
मंगल	राशि-स्वामी	मंगल
कृतिका	नक्षत्र	अनुराधा
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	शनि
1	चरण	2
वृद्धि	योग	सुकर्मा
तैतिल	करण	शकुनि
अ-अश्विनी	जन्म नामाक्षर	नी-निष्ठा
सिंह	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	धनु
क्षत्रिय	वर्ण	विप्र
चतुष्पाद	वश्य	कीटक
मेष	योनि	मृग
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	मध्य
गरूड़	वर्ग	सर्प

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 5वर्ष 3मा 13दि		23:30:21	वृष	लग्न	मिथु	10:05:18	शनि 11वर्ष 1मा 7दि	
राहु		20:49:15	कर्क	सूर्य	वृश्चि	23:57:09	केतु	
20/11/2018		28:14:55	मेष	चंद्र	वृश्चि	08:52:31	16/01/2025	
20/11/2036		14:15:59	मिथु	मंगल	सिंह	26:35:42	17/01/2032	
राहु	03/08/2021	14:09:52	सिंह	बुध	धनु	13:08:56	केतु	14/06/2025
गुरु	27/12/2023	15:11:38	धनु व	गुरु	धनु	26:19:30	शुक्र	14/08/2026
शनि	02/11/2026	05:51:06	मिथु	शुक्र	तुला	26:38:08	सूर्य	20/12/2026
बुध	21/05/2029	13:17:18	मीन व	शनि	मीन	06:49:40	चन्द्र	21/07/2027
केतु	09/06/2030	15:53:50	कन्या व	राहु व	कन्या	11:24:54	मंगल	17/12/2027
शुक्र	09/06/2033	15:53:50	मीन व	केतु व	मीन	11:24:54	राहु	04/01/2029
सूर्य	03/05/2034	08:17:52	मक व	हर्ष	मक	08:18:38	गुरु	11/12/2029
चन्द्र	02/11/2035	02:02:54	मक व	नेप	मक	02:14:33	शनि	19/01/2031
मंगल	20/11/2036	06:31:37	वृश्चि व	प्लूटो	वृश्चि	09:45:11	बुध	17/01/2032

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:48:39 चित्रपक्षीय अयनांश 23:48:52

लग्न-चलित

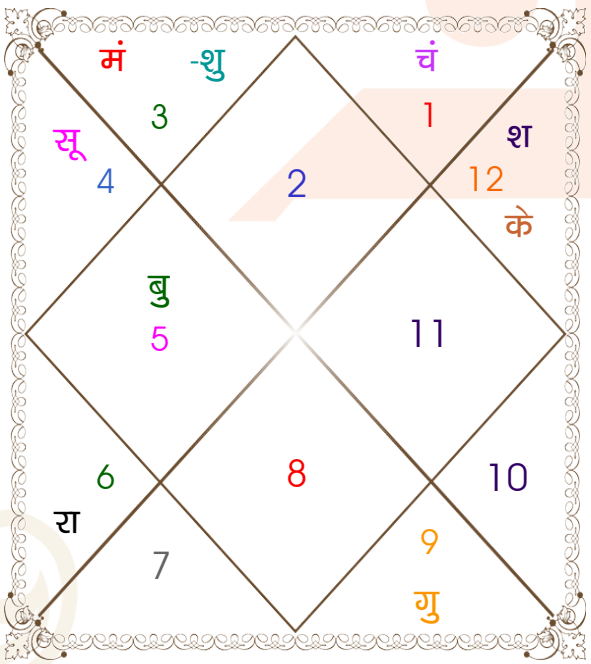

लग्न-चलित

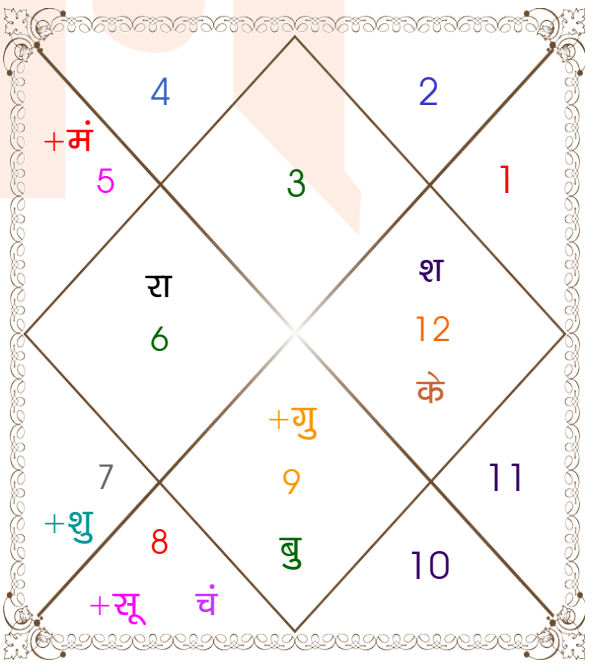

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	कीटक	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मेष	मृग	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	मंगल	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मेष	वृश्चिक	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	19.50		

कुल : **19.5 / 36**

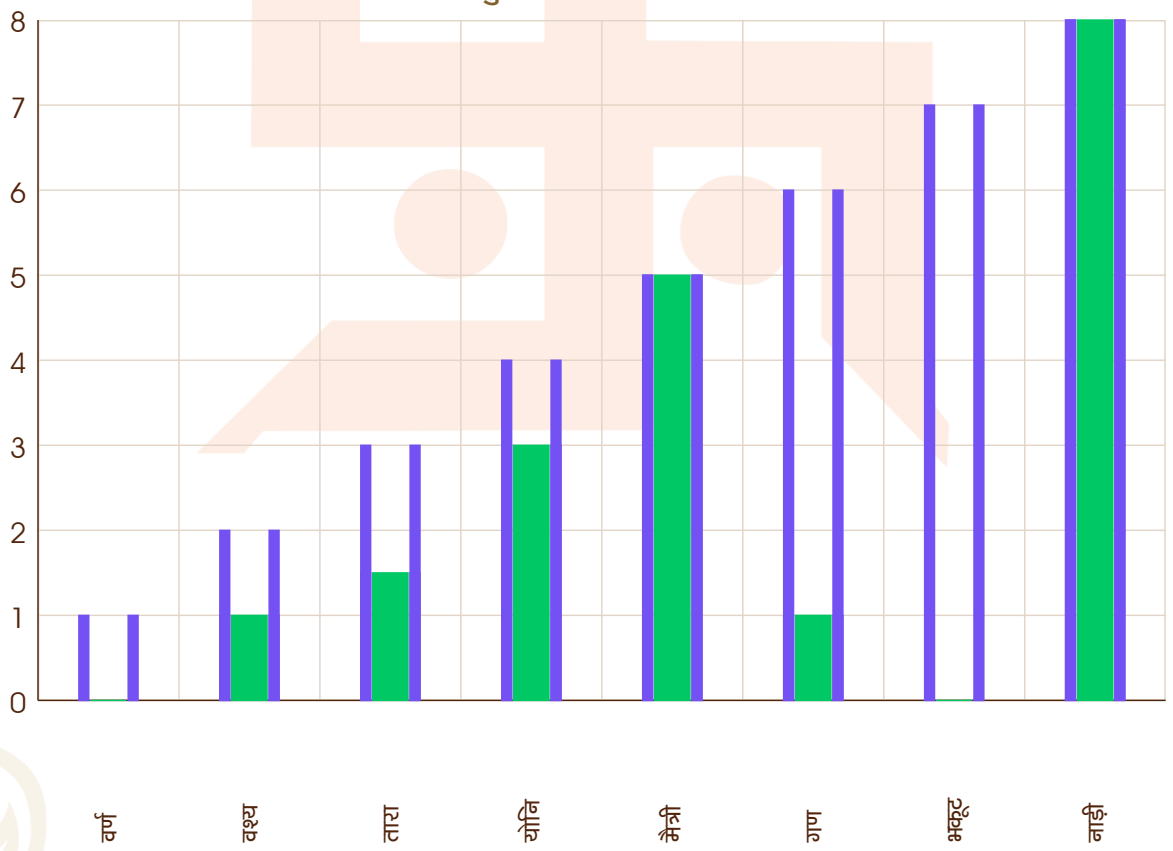

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

क्पहअपरंल का वर्ग गरूड़ है तथा च्ववरं का वर्ग सर्प है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार क्पहअपरंल और च्ववरं का मिलान शुभ है।

मंगलीक दोष मिलान

क्पहअपरंल मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है।

च्ववरं मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

क्पहअपरंल तथा च्ववरं में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

P. AMAN BHATORE
M10, SAI RAM PLAZA , MANGAL NAGAR , AB ROAD , INDORE (MP)
+91-7049001004
amanbhatore1998@gmail.com

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

क्पहअपरंल का वर्ण क्षत्रिय तथा च्ववरं का वर्ण ब्राह्मण है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण दोनों के बीच सदैव अहं का टकराव होता रहेगा। साथ ही च्ववरं हमेशा श्रेष्ठता मनोग्रंथि से ग्रस्त रहेंगी तथा स्वयं को अपने पति से हमेशा अधिक बुद्धिमान एवं चतुर समझेंगी। श्रेष्ठता की यही भावना क्पहअपरंल एवं बच्चों के विकास में बाधक साबित हो सकती है।

वश्य

क्पहअपरंल का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं च्ववरं का वश्य कीट है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। चतुष्पद एवं कीट दो अलग प्रकार के प्राणी होते हैं किंतु प्रकृति में इनका सह-अस्तित्व होता है। इस प्रकार दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद भिन्न हो सकते हैं फिर भी ये एक-दूसरे को नुकसान नहीं पहुंचायेंगे। इसीलिए क्पहअपरंल चतुष्पद एवं च्ववरं कीट होने पर विवाह को स्वीकृति प्रदान की जाती है यद्यपि कि दोनों के स्वभाव, गुण, व्यवहार, पसंद/नापसंद में अंतर रहेगा। फिर भी ये दोनों एक-दूसरे के बीच सौहार्दपूर्ण संबंध रहेंगे तथा अपने-अपने दायित्वों एवं कर्त्तव्यों का निर्वहन करते रहेंगे।

तारा

क्पहअपरंल की तारा प्रत्यरि तथा च्ववरं की तारा साधक है। क्पहअपरंल की तारा प्रत्यरि होने के कारण यह मिलान औसत मिलान ही है। विवाह के उपरांत क्पहअपरंल कालांतर में बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं नैतिक पतन का शिकार हो सकता है। उसके अवैध संबंध भी हो सकते हैं। परिणामस्वरूप च्ववरं को काफी कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। भविष्य में तनाव, निराशा, अवसाद एवं पीड़ा के कारण उसका झुकाव अध्यात्म की ओर हो सकता है।

योनि

क्पहअपरंल की योनि मेष है तथा च्ववरं की योनि मृग है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से

उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में क्पहअपरंल एवं च्ववरं दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि क्पहअपरंल एवं च्ववरं दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

क्पहअपरंल का गण राक्षस तथा च्ववरं का गण देव है। अर्थात च्ववरं का गण क्पहअपरंल के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण क्पहअपरंल निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही क्पहअपरंल का च्ववरं के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। च्ववरं हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

क्पहअपरंल से च्ववरं की राशि अष्टम भाव में स्थित है तथा च्ववरं से क्पहअपरंल की राशि षष्ठम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। इस मिलान को भकूट मिलान में स्वीकृति नहीं प्रदान की जाती है तथा 0 अंक/गुण प्रदान किए जाते हैं। क्पहअपरंल एवं च्ववरं दोनों आक्रामक, गुस्सैल एवं झगड़ालू स्वभव के होंगे। क्पहअपरंल शारीरिक रूप से कमजोर हो सकते हैं, उनके अनेक शत्रु हो सकते हैं तथा अपने व्यवसाय में भी उन्हें जूझना पड़ सकता है। दूसरी ओर च्ववरं बिल्कुल लापरवाह, कोई भी कर्त्तव्य एवं जिम्मेदारी नहीं निभाने वाली, हरदम स्वयं के स्वार्थपूर्ति में ही खोई रहने वाली होंगी। उन्हें किसी भी प्रकार का वैवाहिक सुख प्राप्त नहीं हो पायेगा तथा उनके पति की मृत्यु की भी संभावना बनी रहेगी।

नाड़ी

क्पहअपरंल की नाड़ी अन्त्य है तथा च्ववरं की नाड़ी मध्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान नहीं है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोष मुक्त है। अर्थात यह मिलान अति उत्तम मिलान है। अन्त्य एवं मध्य नाड़ी दो महत्वपूर्ण जीवनी शक्तियों पित्त एवं कफ की कारक हैं। जिसके कारण दम्पत्ति का परस्पर प्रेम, अनुकूलता, अच्छा भविष्य, सहयोग की भावना बनी रहेगी। आपकी संतान शक्तिशाली, बुद्धिमान, आज्ञाकारी एवं भाग्यशाली होंगी।

मेलापक फलित

स्वभाव

क्पहअपरंल की जन्म राशि अग्नितत्व युक्त मेष राशि है तथा च्ववरं की जलतत्व युक्त वृश्चिक राशि है। इसके प्रभाव से आप दोनों के जीवन में विचार धाराओं में अंतर रहेगा। इन विभिन्नताओं के कारण आप वैचारिक रूप से एक दूसरे को समझने में असमर्थ रहेंगे अतः संबधं में गहनता की न्यूनता रहेगी। अतः आपसी सामंजस्य से ही मधुरता की संभावना बनेगी।

क्पहअपरंल और च्ववरं दोनों की राशि का स्वामी मंगल है। अतः वैचारिक मतभेदों को छोड़कर इनमें परस्पर मित्रता स्नेह एवं सहानुभूति का भाव रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति ईमानदार तथा कर्तव्य परायण रहेंगे तथा सुख दुख में एक दूसरे की सेवा तथा सहायता करना अपना कर्तव्य समझेंगे। इस प्रकार एक दूसरे के प्रति आत्म समर्पण की भावना से आपका दाम्पत्य जीवन सुखी हो सकता है।

क्पहअपरंल की जन्म राशि च्ववरं की राशि से षष्ठ तथा च्ववरं की राशि क्पहअपरंल से अष्टम पड़ती है अतः यह षडाष्टक भकूट दोष माना जाता है। इसके प्रभाव से क्पहअपरंल अपने कार्य कलापों में ईमानदार तथा शीघ्रता दिखाने वाले होंगे। यद्यपि च्ववरं में भी ईमानदारी का भाव विद्यमान रहेगा परन्तु प्रतिरोध या बदले की भावना हो सकती है लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। तथापि अच्छे संबधों के लिए अनावश्यक वाद विवादों से दूर रहना चाहिए।

क्पहअपरंल का वश्य चतुष्पाद तथा च्ववरं का वश्य कीट है। इसके प्रभाव से इनकी अभिरूचियों में समानता रहेगी तथा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक रूप से एक दूसरे को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट करने में सक्षम रहेंगे। लेकिन काम सम्बंधो में क्पहअपरंल की व्यग्रता तथा च्ववरं का स्वार्थी भाव यदा कदा समस्या उत्पन कर सकता है। अतः ऐसे भावों की उपेक्षा करनी चाहिए ।

क्पहअपरंल का वर्ण क्षत्रिय है। अतः वह साहसी परिश्रमी एवं शूरवीर के भाव से युक्त रहेंगे। च्ववरं का ब्राहमण वर्ण होने के कारण धार्मिक एवं शैक्षणिक क्रियाकलपो में विशेष रूचि रहेगी तथा विचारों में भी सात्विकता का प्रभाव रहेगा।

धन

क्पहअपरंल और च्ववरं दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

क्पहअपरंल की नाड़ी अन्त्य तथा च्ववरं की नाड़ी मध्य है। अतः अलग अलग नाड़ियों में उत्पन्न होने के कारण नाड़ी दोष से ये मुक्त रहेंगे। इसके प्रभाव से इनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को परिश्रम एवं पराक्रम से सिद्ध करने में समर्थ होंगे। साथ ही मंगल भी इन दोनों के लिए शुभ ही रहेगा तथा इनके स्वास्थ्य पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। अतः इनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इस प्रकार उत्तम वैवाहिक जीवन के लिए यह मिलान श्रेष्ठ रहेगा।

संतान

संतति की दृष्टि से क्पहअपरंल और च्ववरं का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से क्पहअपरंल और च्ववरं को उचित समय पर संतति प्राप्ति होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार से विलम्ब या व्यवधान नहीं होगा। साथ ही बच्चों के मध्य अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उचित मात्रा में उनका पालन पोषण करने का अवसर प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त क्पहअपरंल और च्ववरं के पुत्र एवं कन्याओं की संख्या बराबर रहेगी।

च्ववरं का प्रसव सामान्य रूप से होगा तथा इसमें उन्हें किसी भी प्रकार से परेशानी या कष्ट का सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही किसी प्रसूति संबधी चिकित्सा की भी आवश्यकता नहीं रहेगी। अतः च्ववरं के मन में इसके प्रति जो अनावश्यक भय या चिन्ताएं रहती है उसको दूर कर देना चाहिए तथा नियमित रूप से गर्भावस्था में डाक्टरी परीक्षण करवाने चाहिए। इस प्रकार च्ववरं सुदंर स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में सफल होंगी तथा स्वयं भी शांति तथा स्वस्थता की अनुभूति करेंगी।

बच्चों के द्वारा क्पहअपरंल और च्ववरं को पूर्ण सन्तुष्टि मिलेगी तथा अपनी योग्यता बुद्धिमता एवं व्यवहार कुशलता से वे अपने क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे यद्यपि माता पिता के वे आज्ञाकारी रहेंगे तथा उनकी इच्छा के विरूद्ध कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथापि माता के प्रति उनके मन में विशेष लगाव तथा सम्मान का भाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा पालन करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। इस प्रकार क्पहअपरंल और च्ववरं का पारिवारिक जीवन सुख तथा शांति से पूर्ण रहेगा तथा प्रसन्नता पूर्वक वे अपना समय व्यतीत करेंगे।

ससुराल-सुश्री

च्ववरं के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत च्ववरं के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

च्ववरं अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता

पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार च्ववरं के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

क्पहअपरंल के सास से सामान्यतया मधुर संबध रहेंगे तथा उनके प्रति मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना विद्यमान रहेगी। साथ ही सास को अपनी माता के समान आदरणीया समझेंगे। वह सपत्नीक अवसरनुकूल ससुराल में उनसे मिलने भी जाया करेंगे तथा अपने मन में कभी श्रेष्ठता की भावना नहीं लाएंगे जिससे संबध अनुकूल रहेंगे।

ससुर के साथ में क्पहअपरंल के संबध विशेष अनुकूल नहीं रहेंगे तथा आयु में काफी अंतर होने के कारण उनके आपस में मतभेद होंगे लेकिन यदि दोनों परस्पर सामंजस्य की प्रवृति एवं बुद्धिमता से व्यवहार करें तो संबधों में मधुरता का भाव आ सकता है। साथ ही साले एवं सालियों से भी संबधों में अनुकूलता रहेगी तथा एक दूसरे के प्रति पूर्ण सम्मान स्नेह तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा मित्रता की भी भावना रहेगी जिससे एक दूसरे को समझने में सफल रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल का दृष्टिकोण क्पहअपरंल के प्रति सकारात्मक रहेगा तथा क्पहअपरंल भी मधुर संबधों को बनाने में नित्य यत्नशील रहेंगे।